64th Kerala School Kalolsavam, January 14 to 18, 2026, Thrissur
Item Code: 952
Participant Code: 030

विषय : " हारना मेरेलिए मंज़ूर नहीं "

जीवन और लक्ष्य के बीच..

कला आसमान। ज़मीन पर पेड़-पौधों में पानी के बूंदें। बारिश से धरती ठंडा पड़ गया था। उस काली अंतरिक्ष का परदा हटाकर सूरज एक कोने से उग रहा था। सब घरों में रोशनी की कोई निशानी नहीं। अचानक एक घर में रोशनी पड़ी और एक कमरे से आवाज़ सुना। " किरण, जल्दी उठो, तुमको दौड़ने का वक्त होगया.. "। घर के दूसरे कमरे में रोशनी जली और दस साल का बच्चा किरण जाग उठा। उसके कमरे में दीवार में दो चित्र थे। एक उसका बाप का जो कई साल पहले मर गये थे और दूसरा दुनिया में सबसे तेज से दौड़नेवाले व्यक्ति " उसैन बोल्ट " का..। किरण को दुनिया में सबसे तेज़ दौड़नेवाला व्यक्ति बनने का सपना है।

किरण का बाप उसके बचपन में ही मर गयी थी। वे बहुत अच्छे तैराक थे। वह किरण को बहुत प्यार करते थे। उनका भी सपना था कि किरण

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തിയ്യതി................... പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

को उसका लक्ष्य प्राप्त करके देखना। लेकिन जल में डूबते हुए दो बच्चों को बचाने के कोशिश में वे डूबकर मर गये। उन्होंने उन बच्चों को बचाया और अपना जीवन खो दिया। किरण के मन में उसका बाप का स्थान बहुत ऊँचा था। वह ~~उनका सपनों~~ उनके सपने को हासिल करने केलिए हर दिन मेहनत करता है।

किरण अपने कमरे से बाहर आकर कहाँ .. "माँ आज हमारे स्कूल में दिल्ली से कई लोग आयेंगे और खिलाड़ी बच्चों को ~~क~~ वहाँ लाकर वो परिशीलन देंगे"। "वह तो बहुत अच्छी बात है बेटा .. तुम दौड़कर तुम्हारी खासियत उनको दिखाओ .. वह तुमे ज़रूर चुनेंगे और तुम्हारा सपना भी पूरा होगा .."। किरण को यह सुनकर बहुत अच्छा लगा। उसकी माँ उसे हर चीज़ में प्रेरणा देता है। वह तुरंत अपने कपड़े बदलकर दौड़ने केलिए निकल पड़ा। वह रोज़ दो-तीन किलोमीटर तेज़ी से भागता था और अपने तेज़ी को बढ़ाने की कोशिश करता था। आज भी दो-तीन किलोमीटर दौड़कर वह वापस आया और अपने स्कूल जाने की तैयारियाँ शुरू

किया। उसने तुरंत नहाना नहाया और स्कूल बस के आते ही उसमें छोड़कर तुरंत स्कूल चला गया।

वह स्कूल पहुंचते ही अनेक लोगों को देखा जो दिल्ली से आये थे। वह अपने कक्षा जाकर देखा तो वहाँ सारे बच्चे तैयार हो रहे थे विभिन्न प्रतियोगिता के लिए। उसका मित्र तरुण ने उसे देखकर सबके सामने जोर होकर कहा: "आज मैं किरण को दौड़कर हराऊँगा और दिल्ली जाऊँगा"। तरुण और किरण अच्छे मित्र थे। लेकिन दोनों का सपना एक होने के कारण उन दोनों के बीच हमेशा लड़ाई था। दोनों बहुत तेज़ दौड़ते थे और एक दूसरे से कभी हार नहीं मानते। बाकी सब बच्चे यह सुनकर बहुत उत्सुक हुए। उन्हें मालूम था कि इन दोनों कोई एक ही वहाँ सबसे तेज़ी से दौड़ता था। किरण ने मुस्कुराकर तरुण का चुनौती को स्वीकार किया। दोनों अपने कपड़े बदलकर मैदान में पहुंचे। आखिर वह समय आ गया और सब बच्चे इनके बीच का दौड़ को देखने के लिए तत्पर थे थे।

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം
2026 ജനുവരി 14 - 18 • തൃശ്ശൂർ
തീയതി......................
പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

दोनों के बीच का दौड़ शुरू होगया। दोनों हार मानने को तैयार नहीं थे। दोनों एक दूसरे को आगे न बढ़ाकर तेज़ी से भागने लगे। दोनों के बीच काफी तेज़ मुकाबला था। आखिर में किरण जीत गया और सभी बच्चे उठकर तालियाँ ~~बजाने~~ बजाने लगे। किरण बहुत खुश हुआ और तरुण ने आकर हाथ मिलाकर उससे कहा : "तुम ही असली हो मेरे भाई.. जाओ जाकर तुम्हारा सपना पूरा करो..."। यह सुनते ही किरण खुश होगया। और वह कुछ कहने वाला था.. तभी अचानक उसके आँखों में अंधेरा पड़ने लगा और वह बेहोश हो गया। सभी लोग उसके ओर भाग आये। सब लोग उसे उठाकर अस्पताल ~~चलने के लिए~~ ले गए।

कई देर तक किरण आँख नहीं खुला। उसका माँ और दोस्त सभी वहाँ ~~न~~ थे। आखिर में किरण का आँख खुल गया और उसके सामने कई लोग खड़े थे। उसे ~~x~~ कुछ समझ नहीं आया। उसके पैरों में बहुत दर्द महसूस

हो रहा था..। अचानक डॉक्टर चले आये और उसे और उसकी माँ को उनके कमरे में बुलाया। "किरण, तुम बहुत अच्छे दौड़ते हो, तुम्हें दिल्ली जाने की अनुमती मिल गई है... लेकिन अब तुम यह दौड़ना छोड़ दो..." डॉक्टर के ने इतना कहते ही किरण और माँ दोनों आश्चर्य से एक दूसरे को देखने लगे। "क्यों.. क्या हुआ..?" किरण ने चिंतित होकर पूछा..। "तुम्हारी पैर को यह सहने की शक्ती नहीं है.. वह बहुत दुरबल हो गया है.. अगर तुम दौड़ना शुरू करोगे तो शायद वह काटकर निकालने पड़ेगा... तुम्हारा शरीर यह सब नहीं सह सकता और शायद तुम मर भी जाओगे"। इतना सुनकर माँ रो पड़ी और किरण को शॉक सा लगा..। वह कई देर चिंतित रहा और बोला: "अगर मैं इस पैर से दुनिया के सबसे तेज़ दौड़नेवाला व्यक्ती बन सकता हूँ तो मुझे उसके बाद ~~इससे~~ इसे खोने की कोई फिकर नहीं होगी.. मुझे सबसे तेज़ बनकर पापा का सपना पूरा करना है.." यह सुनकर माँ रो पड़ी पर वह अपने बच्चे के

सपने के साथ खड़ी रही और उसका साथ दिया।

अस्पताल से निकलकर दोनों स्कूल गये और दिल्ली जाने की सभी चीज़ें ठीक किये। उन्होंने किरण की पैर की बात किसीको नहीं बताया और किरण दिल्ली जाकर अपना परिशीलन शुरू किया। उसके पैर में दर्द था लेकिन वो सब सहकर अपने सपने के लिये आगे बढ़ता रहा। आखिर वह दिन आगया. दिल्ली से एक बच्चे को चुनना था जो अंतराष्ट्र दौड़ प्रतियोगिता में भारत से दौड़ेगा। वहाँ दुनिया के कई कोनें से तेज़ दौड़नेवाले व्यक्ति आते थे। और भारत से किरण को उन्होंने चुना। किरण बहुत खुश हुआ। वह उस प्रतियोगिता के लिए दिन रात मेहनत करने लगा. उसका माँ उसके साथ देता था।

आखिर वह दिन आ पहुँचा। प्रतियोगिता के लिए किरण और माँ अमरिका पहुँच गये। किरण के पैर में एक सख्त दर्द हो रहा था लेकिन

उसने वह न मानकर मैदान में आ खड़ा..। उसके दिल में एक आग जल रहा था अपने और अपने पापा के सपने की पूर्ती करने का आग.. सभी बच्चे दौड़ने केलिए शुरु और एक.. दो...तीन कहते ही सब उनके जान से भागने लगे। किरण सबसे आगे निकला लेकिन उसके पैर का दर्द के कारण वह मैदान में गिर गया.. उसका माँ चिल्ला रही थी और सभी दर्शकों किरण के नाम पुकार रहे थे। किरण कोशिश करके भी नहीं उठ पाया..। सभी बच्चे उसके आगे भाग पड़े.. वह चिल्लाकर अपने सारी शक्ति से उठा और एक एक करके सबके आगे दौड़ने लगा.. वह अपनी रेस की पूर्ती करनेकेलिए जान भी दे रहा था। उसे हारना मंजूर नहीं था..। आखिर सबको पीछे छोड़ते हुए वो उस दौड़ में जीत गया और तुरंत ही बेहोश पड़ गया..। उसका माँ और सभी लोग उसके पास भाग आया और वह बेहोश पड़ा वहाँ लेटा था।

कई दिन बीत गये। किरण को होश नहीं आया ऐसा था। सभी लोग बहुत चिंतित थे। तभी उसके पैर के बारे में उसकी माँ ने सबको बताया। वह सब यह सुनकर रोने लगे। तभी अचानक किरण को होश आया और उसने आँखें खुली.. उसको पैर में कुछ महसूस नहीं हो रहा था..। माँ खुशी से उसे गले लगाकर रोने लगी। "माँ क्या मैं जीत गया..!"। किरण ने पूछा। "हाँ बेटा तुमने सबी को हराकर ~~दुनि~~ दुनिया के तेज़ बच्चों में एक बन गये हो"। माँ आँसू हटाकर ~~कह~~ कह पड़ी। यह सुनकर किरण को बहुत खुशि हुई और वह रो पड़ा। उसने उसका और बाप का सपना पूरा किया और अपना लक्ष्य प्रापत किया।

उस दिन से वह चल नहीं सका और माँ उसका देखभाल करते रही। उसने अपना आखरी दौड उस दिन दौडा और अपना सपना पूरा करा। वह उसके दोस्तों और सभी लोगों के लिए एक अच्छा नमूना बन गया। उसका माँ-बाप को

बहुत ~~अ~~ खुशी होगा । वह अपने पैर को खोने को भी तैयार था लेकिन हार मानने को तैयार नहीं था । पैर ~~व~~ खोना का दुख उसको अपने जीवन में ~~कई~~ कभी नहीं हुआ । वह अपने लक्ष्य को ऊँचा देखता था ।